Roll No....................

C-0000

B.A. I, INTERNAL ASSESSMENT EXAMINATION, 2021-22

हिन्दी–साहित्य

प्रश्न पत्र – द्वितीय

(हिन्दी कथा साहित्य)

Time: Three Hours *Maximum Marks : 75*

प्रश्न 1. निम्न गद्यांशों का सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(अ) वहॉं के वातावरण में सरूर में था। कितने तो यहॉं आकार एक चुल्लू में मस्त हो जाते है। शराब से ज्यादा यहॉं की हवा उन पर नशा करती थी। जीवन की बाधाएँ यहॉं खींच लाती थी। और कुछ देर के लिए यह भूल जाते थे कि ये जीते या मरते हैं या न जीते है न मरते है।

अथवा

आह चम्पा, तुम कितनी निर्दयी हों! बुद्धगुप्त को आज्ञा देकर देखो तो–! कहो क्या नहीं कर सकता। जो तुम्हारे लिए नये द्वीप की सृष्टि कर सकता है, नयी प्रजा खोज सकता है। नये राज्य बना सकता है, उसकी परीक्षा लेकर देखो तो–! कहों चम्पा! वह कृपाण से अपना हृदय–पिण्ड निकाल अपने हाथों अतल जल में विसर्जन करे दे!

(ब) पान जैसी पुतली छुरी से बांस की तीलियां और कमानियों को चिकनाता हुआ सिरचन अपने काम में लग गया। रंगीन सुतलियों से झब्बे डालकर वह चिक बुनने बैठा। डेढ़ हाथ की बनाई देखकर हीं लोग समझ गए कि इस बार एकदम नये फैशन की चीज बन रही है, जो पहले कभी नहीं बनी।

अथवा

एक कामयाब पार्टी वह है, जिसमें ड्रिंक कामयाबी से चल जाय। शामनाथ की पार्टी सफलता के शिकार चूमने लगी। वार्तालाप उसी रौ में बह रहा था, जिस रौ में गिलास भरे जा रहे थें। कहीं कोई रूकावट न थी, कोई अड़चन न थी। साहब को व्हीस्की पसंद आयी थी। मेमसाहब को पर्दे पसंद आये थे। सोफा–कवर का डिजाइन पसंद आया था, कमरे की सजावट पसंद आयी थी।

प्रश्न 2. औपन्यासिक तत्वों के आधार पर 'गबन'उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

अथवा

जालपा का चरित्र–चित्रण कीजिए।

प्रश्न 3. मलबे का मालिक कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'चीफ़ की दावत' कहानी के आधार पर शामनाथ का चरित्र–चित्रण कीजिए।

प्रश्न 4. निम्न में किसी दो पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

1. शिवानी की कहानी कला पर प्रकाश डालिए।
2. बालशौरी रेड्डी की काव्यसौष्ठव।
3. उपेन्द्रनाथ अश्क की साहित्यिक उपलब्धियॉं।

प्रश्न 5. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'आकाशदीप' कहानी के रचनाकार का नाम बताइए।
2. शामनाथ किस कहानी का पात्र है।
3. ठेस कहानी का नायक का नाम लिखिए।
4. प्रेमचन्द के दो रचनाओं के नाम लिखिए।
5. जालपा किस रचना की पात्र है।
6. आपके पाठ्यपुस्तक में कितनी कहानियॉं संकलित है।
7. बादल कहानी के रचनाकार का नाम लिखिए।
8. 'दो ...' किसकी रचना है।
9. प्रसाद के महाकाव्य का नाम क्या है।
10. चौधरी मिस्बरिया किस कहानी के पात्र है।

प्राचार्य
चन्द्रपाल डडसेना शासकीय
महाविद्यालय पिथौरा
जिला–महासमुन्द (छ.ग.)

Chandrapal Dadsena Govt. College Pithora (C.G.) AISHE C-21783
Chandrapal Dadsena Govt. College Pithora (C.G.) IQAC

Roll No....................

C-0000

B.A. I, INTERNAL ASSESSMENT EXAMINATION, 2021-22

हिन्दी–साहित्य

प्रश्न पत्र – प्रथम

(प्राचीन हिन्दी–काव्य)

Time: Three Hours *Maximum Marks : 75*

प्रश्न 1. निम्न पद्यांशों का सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(अ) जाका गुरू भी ऑंधला, चेला खरा निरंध।
अंधे–अंधा ठेलिया, दून्यूं कूप पड़ंत।।

राम रसाइन प्रेम रस, पीवत अधिक रसाल।
कबीर पीवण दुर्लभ है, मॉंगै सिस कलाल।।

अथवा

पाट महादेइ! हिये न हारू। समुझि जीउ, चित चेतु सभारू।।
भौंर कॅंवल संग होई मेरावा। सॅंवरि नेह मालति पहँ आवा।।
पपिहै स्वाती सौं जस प्रीती। टेकु पियास, बॉंधु मन थीतीं।।
धरतिहि जैस गगन सौं नेहा। पलटि आव बरषा ऋतु मेहा।।
पुनि बसंत ऋतु आव नवेली। सो रस, सो मधुकर , सो बेली।।
जिनि अस जीव करसि तू बारी। यह तरिवर पूनि उठिहिं सॅंवारी।।
दिन दस बिनु जल सूखि बिधंसा। पुनि सोई सरवर, सोई हंसा।।
मिलहिं जो बिछुरे साजन, अंकम भेटि गहंत।
तपनि मृगसिरा जे सहै, ते अद्रापलुहंत।।

(ब) उद्धव! बेगि ही ब्रज जाहु।
सुरति संदेस सुनाय मेटी बल्लभिन को दाहू।।
काम पावक तूलमय तन बिरह स्वास समीर।
भसम नाहिंन होन पाबत लोचनन के नीर।।
अजौं लौं यहि भॉंति है कछुक सजग सरीर।
इते पर बिनु समाधाने क्यों धरैं तिय धीर।।
कहौं कहा बनाय तुमसो सखा साधु प्रबीन।
सूर सुमति बिचारिए क्यों जियें जल बिनु मीन।।

अथवा

चलेउ नाइ सिरू पैठेउ बागा। फल खाएसि तरू तोरैं लागा।।
रहे तहाँ बहु भट रखवारे। कछु मारेसि कछु जाइ पुकारें।।
नाथ एक आवा कपि भारी। तेहिं असोक बाटिका उजारी।।
खाएसि फल अरू बिटप उपारें। रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे।।
सुनि रावन पठए भट नाना। तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना।।
सब रजनीचर कपि संघारे। गए पुकारत कछु अधमारे।।
पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा। चला संग लै सुभट अपारा।।
आवत देखि बिटप गहि तर्जा। ताहि निाति महाधुनि गर्जा ।।

प्रश्न 2. कबीर अपने युग के सच्चे समाज सुधारक थे। इस कथन की विवेचना विवेचना कीजिए।

अथवा

जायसी के वियोग वर्णन की समीक्षा कीजिए।

प्रश्न 3. सूरदास के काव्य सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।

अथवा

तुलसीदास की भक्ति–भावना के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

प्रश्न 4. निम्न में किसी दो पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

1. विद्यापति की श्रृंगार भावना
2. रसखान की काव्यगत विशेषताए।
3. रहीम के काव्य में भावपक्ष।

Principal
Chandrapal Dadsena Govt.
College Pithora,
Distt-Mahasamund(C.G.)

प्रश्न 5. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कबीरदास के किसी एक रचना का नाम लिखिए।
2. सुन्दरकाण्ड के रचनाकार का नाम बताइए।
3. आदिकाल को किस अन्य नाम से जाना जाता है।
4. भक्तिकाल के दो कवियों के नाम लिखिए।
5. किस कवि को 'मैथिल–कोकिल' के नाम से जाना जाता है।
6. रहीम का पूरा नाम लिखिए।
7. कबीरदास जी के गुरू का नाम क्या है।
8. घनानन्द के प्रेयसी का नाम लिखिए।
9. रत्नसेन कहाँ का राजा था।
10. रामायण के रचयिता का नाम लिखिए।

Chandrapal Dadsena Govt. College • Pithora (C.G.) • IQAC

Chandrapal Dadsena Govt. College • Pithora (C.G.) • AISHE C-21783

प्राचार्य
चन्द्रपाल डडसेना शासकीय
महाविद्यालय पि...
जिला–महासमुं...

1. क्रोध अंधा होता है।
2. साहित्य समाज का दर्पण है।
3. चरित्र सर्वोत्तम धन है।

6. देवनागरी लिपि के उद्‌भव व विकास पर प्रकाश डालते हुए इसकी विशेषताए लिखिए।

अथवा

Roll No....................

C-0000

INTERNAL ASSESSMENT EXAMINATION, 2021-22

B.A.I / B.COM.I / B.SC. I

(Foundation Course)

Paper First

HINDI LANGUAGE

Time: Three Hours *Maximum Marks : 75*

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'पल्लवन का अर्थ स्पष्ट करते हुए एक कुशल विस्तारक के गुणों की विवेचना कीजिए।

   अथवा

   निम्न का पल्लवन कीजिए (कोई दो)

   1. क्रोध अंधा होता है।
   2. साहित्य समाज का दर्पण है।
   3. चरित्र सर्वोत्तम धन है।

2. पत्र लेखन से आप क्या समझते है। एक अच्छे पत्र लेखन में किन–किन विशेषताओं का होना आवश्यक है।

3. अनुवाद को परिभाषित करते हुए इसके प्रकारों का वर्णन कीजिए।

   अथवा

   ईदगाह कहानी का सरांश लिखिए।

4. 'लोकोक्ति तथा मुहावरों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

   अथवा

   अनेक शब्दों के लिए एक शब्द बताइए (कोई पॉच)

   1. जिसका कभी जन्म न हो।
   2. जिसका आचरण अच्छा न हो।
   3. उपकार को मानने वाला।
   4. मृग के समान ऑंखों वाली स्त्री।
   5. क्षणभर में नष्ट होने वाला।
   6. जो सब जगह व्याप्त हो।

5. परिपत्र क्या है। इसकी विशेषताएँ बताते हुए इसके प्रारूप बनाइए।

   अथवा

   कार्यालयीन ज्ञापन से आप क्या समझते हैं। इसकी विशेषताएँ बताइए।

6. देवनागरी लिपि के उद्‌भव व विकास पर प्रकाश डालते हुए इसकी विशेषताए लिखिए।

   अथवा

   मानक भाषा से आप क्या समझते है। इसकी विशेषताएँ बताइए।

7. कम्प्युटर का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसकी उपयोगिता बताइए।

   अथवा

Principal
Chandrapal Dadsena Govt.
College Pithora,
Distt-Mahasamund(C.G.)

निम्न का हिन्दी पद नाम लिखिए (**कोई पॉच**)

1. Administrator 2. Account Officer 3. Biologist 4. Doctor
5. Dean 6. Examinar 7. Governor 8. Judge 9. Pilot

8. संक्षेपण क्या है ? संक्षेपण करते समय किन–किन बातों पर ध्यान देना चाहिए।

अथवा

संक्षिप्ति से क्या आशय है ? इसके रूप एवं प्रकार उदाहरण सहित लिखिए।

9. निम्न गद्यांश का संक्षिप्तिकरण करते हुए उचित शीर्षक दीजिए।

आज हस्तिनापुर की छप पर चढ़कर जब मैने चारों ओर दृष्टि डाली, तब ऐसा लगा, मानों मैं किसी महाश्मशान में खड़ा हूँ। जिसकी कुरूप शान्ति मन में कॉटें चुभोती है और जिसका भीषण सुनसान दूर से हीं भयानक लगता है और इस सुनसान में मरघट की शान्ति के भीतर से एक आवाज उठती है। जो मुझसे पूछना चाहती है कि युधिष्ठिर! क्या तुम इस शान्ति के लिए लड़ाई लड़ने नहीं गये थे? मेरे अपने हीं कर्म व्यंग्य बनकर मुझ पर लोट रहे है। मेरी अपनी हीं इच्छा और अकांक्षा तीर बनकर मुझे विदीर्ण कर रहीं है। ऐसा लगता है कि मैनें जो कुछ सोचा, सब गलत था। जो कुछ किया सब दुष्कर्म था। शकुनि के साथ जुए की बाजी हारकर भी मन से मै हारा नहीं था। किन्तु आज तो इतनी बड़ी लड़ाई जीतकर भी अनुभव होता है कि मै सब कुछ हार चुका हूँ और पराजय की इस व्यथा का कोई निराकरण भी है, इसकी थोड़ी भी आशा नहीं दीखती।

अथवा

निम्न संक्षिप्तियों में से किन्हीं पॉच के मूल रूप लिखिए:

1. यू0जी0सी0
2. वि0वि0
3. मा0शि0मं0
4. रा0सु0का0
5. द्र0मु0क0
6. प0पु0बख्शी
7. एन0एस0एस0

प्राचार्य
चन्द्रपाल डडसेना शासकीय
महाविद्यालय पिथौरा

Chandrapal Dadsena Govt.College Pithora(C.G.) AISHE C-21783

Chandrapal Dadsena Govt.College Pithora(C.G.) IQAC